मोहन राकेश की कहानियों में टूटते संबंध और जुड़े रहने की छटपटाहट

डॉ. किरण शर्मा
हिन्दी विभाग,
डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज़,
यमुनानगर ।

हिन्दी साहित्य के भण्डार में श्रीवृ(करने वाले मोहन राकेश समकालीन कथाकारों में अन्यतम हैं । इन्होंने हिन्दी कथा को दिखावे, बनावटीपन, उथलेपन, कटाक्षों के बंध्न से अलग करके एक अद्भुत अनोखा रूप प्रदान किया है, एक नई अभिव्यक्ति एक नयी आशा को संचरित किया है जो पिछले कई वर्षों से लगातार आगे आने का प्रयास कर रहा था । यही कारण है कि मोहन राकेश के कथा साहित्य में संवेदना की आधुनिकता है । उनकी रचना धर्मिता स्वतंत्राता के बाद भारतीय सामान्य जीवन का मौलिक परिचय देती है ।

भारत के सामाजिक ढांचे में परिवार का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है । प्राचीन आदर्शों को आधुनिक संदर्भ में संगत और सार्थक रूप में चित्रिात करने वाले साहित्यकारों ने पुनरुत्थान युग में परिवार की महत्ता का प्रतिपादन किया है । यह माना गया है कि परिवार के स्नेह – सौहार्द से तृप्त एवम् सन्तुष्ट व्यक्ति समाज एवम् राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व को पूर्ण कर सकता है । मोहन राकेश का कथा–लेखन उस नए स्वरूप का सूचक है जहाँ साहित्य के केन्द्र में केवल व्यक्ति की प्रतिष्ठा ही नहीं, अपितु सामाजिक सरोकारों का समग्र रूप भी प्रस्तुत किया है । मोहन राकेश के अनुसार –फमेरे लिए अनुभूति का सीध संबंध मेरे यथार्थ से है और यथार्थ है मेरा समय और परिवेश ..... व्यक्ति से परिवार, परिवार से राष्ट्र और राष्ट्र से मानव समाज तक का पूरा परिवेश । मैं इनमें से किसी एक से कटकर शेष से जुड़े नहीं रह सकता ..... अपने आस–पास के सन्दर्भ से आंख हटाकर दूर के सन्दर्भ में जी नहीं सकता ।

1

उन्होंने व्यक्ति को काल के आइने में रखकर चित्रित किया है । केवल देश की स्थिति में व्यक्ति का चित्राण उनको मान्य नहीं, क्योंकि साहित्य व्यक्ति की नहीं, उसके पूरे समय की है ।

मोहन राकेश की कहानियां परिवर्तन की एक पूरी प्रक्रिया का साक्षात्कार कराती है । इन्होंनें सृजनात्मक ध्रातल पर संक्रान्ति युग के समस्त दबावों को अपने ऊपर झेला है और इस दबाव से जन्में तनाव और संत्राास को भोगा है । विभाजन के साथ ही नयी जमीन पर नयी मान्यताएं उभर रही थी, किन्तु पांव अभी तक टिक नहीं पा रहे थे । इन्होंने युग की समग्रता को अपने परिवेश में समेटकर व्यक्ति और परिवेश के तथा व्यक्ति और समाज के विविध स्तरीय सम्बन्धें को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है ।

मोहन राकेश की अध्किांश कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना है जिसका मूल केन्द्र व्यक्ति है, अतः इनमें व्यक्ति और समाज दोनों इस प्रकार विलीन हो रहे हैं कि एक को दूसरे से पृथक करना कठिन है । उनका मानना है कि फ्व्यक्ति और समाज को परस्पर विरोधी एक दूसरे से भिन्न और आपस में कटी हुई इकाइयां न मानकर यहाँ उन्हें एक ऐसी अभिन्नता में देखने का प्रयत्न है जहाँ व्यक्ति समाज की विडम्बनाओं का और समाज व्यक्ति की यन्त्राणाओं का आइना है ।[2] इनकी अध्किांश कहानियों सम्बन्धें के विघटन और इससे जुड़े रहने की समकालीन छटपटाहट को व्यक्त करती है । यहां 'एक और जिन्दगी', 'अपरिचित', 'आर्द्रा', 'ग्लास टैंक', 'फौलाद का आकाश', 'गुंझल', 'पहचान', 'सुहागिने, क्वार्टर कहानियों के संदर्भ में टूटते मूल्यों का वर्णन किया गया है ।

अहं के परस्पर टकराव और टकराकर बिखर जाने की बात **'एक और जिन्दगी'** कहानी में प्रकट हुई है । इसमें पति और पत्नी दोनों ही अपने–अपने अहं और अध्किारों की रक्षा के लिए सतत्त जागरूक रहते है, इसी कारण दोनों में टकराव होता है । पति–पत्नी का अहंवादी दृष्टिकोण भारतीय संस्कारों को एक नई दिशा एवम् दशा प्रदान करता है क्योंकि प्रकाश और बीना जो इस कहनी के पात्रा है का परस्पर प्रेम, विवाह और अन्त में तलाक हमारे जीवन संबंधी मूल्यों परम्परागत विचारों और परम्पराओं का उल्लंघन करते है और उल्लंघन

करके भी दोनों सुखी और सन्तुष्ट नहीं रह पाते । इसका कारण यह है कि पुराने मूल्य तो टूटते जा रहे हैं, परन्तु उनके स्थान पर नवीन, स्वस्थ मूल्यों की स्थापना नहीं हो पा रही है ।

'एकाकी जीवन' जीने को विवश होने की स्थिति का वर्णन **'अपरिचित'** कहानी में किया गया है । अपरिचित का 'मैं' अपनी पत्नी की महत्वांकाक्षाओं को पूरा न करने के कारण दोनों के संबंध टूटते है । दोनों एक दूसरे की उपस्थिति में अजनबी बन जाते है और कहानी की पत्नी दिशी भी एक दूसरे में न होने का बोध करते है । इस कहानी की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि जो नारी अपरिचित है वह स्वभावनुकूल होने पर परिचित लगने लगती है और जो परिचित है वह स्वभाव के विपरीत होने के कारण अपिरिचत । परिणामस्वरूप एकाकी जीवन जीने को विवश हैं। यह कहानी बेमेल रूचियों के कारण जीवन में आई रिक्तता, कटुता और अकेलेपन की अभिव्यक्ति है। यह स्थिति बदलते, टूटते मूल्यों के साये में पनपी है । इन्द्र नाथ मदान इसे विवेचित करते हुए लिखते हैं कि – फ्राकेश की यह कहानी उन कहानियों में से है जिसके मूल में चेतना सामाजिक की अपेक्षा वैयक्तिक स्तर पर है ।[३]

जीवन की व्यर्थता एवम् सम्बन्धें का तनाव **'आर्द्रा'** कहानी में चित्रित है । इस कहानी में भाई–भाई के बीच का स्नेह सम्बन्ध का टूट कर तनाव में परिवर्तित होना तथा उनके बीच में छटपटाती मां का चित्राण किया गया है । बड़ा भाई छोटे भाई से अलग सुख–सुविध सम्पन्न जीवन व्यतीत करता है तो छोटा भाई अभावों से ग्रस्त जीवन यापन करता है उन दोनों के बीच मां की तनावपूर्ण जिन्दगी चलती है । उसकी तड़पती ममता प्रतिविम्बित हुई है । यह कहानी महानगरीय परिवेश से जुड़ी है । नगर परिवेश में व्यर्थ होते सम्बन्धें और तनाव की जिन्दगी का यथार्थ उद्घाटन कहानी का लक्ष्य है ।

'ग्लास टैंक' एक ऐसे परिवार की कहानी है जिसका प्रत्येक सदस्य जीवन के प्रति अपनी मान्यताएँ रखता है । वह दूसरे के साथ सहमत न होते हुए भी उसकी भावना की कद्र करता चलता है । इसमें बड़ी सूक्ष्मता के साथ पारिवारिक त्रासदी की अभिव्यक्ति मिलती है । निरन्तर कृत्रिाम होती जा रही जिन्दगी और उसमें समाती ऊब उदासी को प्रकट किया गया है । 'मछली' व ग्लास टैंक प्रतीकार्थ रखते हैं । 'ग्लास टैंक' परिवेश की सीमितता और उसकी हदों को व्यक्त करता है । 'ग्लास टैंक' में मछलियों का इध्र–उध्र घूमना और अपनी हदबंदी

पर शीशे से उनकी टकराहट में उनकी मुक्ति का प्रयास झलकता है वैसे ही नीरू और मम्मी भी अपनी सीमाओं में रहकर भी उनसे ही टकराती रहती है । बाहर आना वे भी चाहती हैं, किन्तु वे अपनी विवशता और उदासी पर दुखी तो हो सकती है, उसे काटकर मन मुताबिक जी नहीं सकती है ।

'फौलाद का आकाश' कहानी पति–पत्नी एवम् तीसरे व्यक्ति के संबंध को लेकर लिखी गई है । दाम्पात्य संबंधें को ध्केल रहे रवि और मीरा इस कहानी के प्रमुख पात्रा है । रवि अपनी पत्नी मीरा के साथ दिन में एक औपचारिक जिन्दगी जीता है क्योंकि मीरा की भावुकता उसे पसंद नहीं किन्तु रात में मीरा से ही अपनी कामवासना तृप्त करता है । उनके परस्पर के व्यवहार में एक उदासीनता रहती है । सम्बन्धें के अजनबीपन में मीरा और रवि एक जीवन जी रहे है । रवि अब डिग्री कालेज में साधरण लेक्चरर न होकर –स्टील प्लांट में लेबर है । पूरी सुख–सुविधओं में रहते हुए भी ये लोग अपने से तथा परिवेश से कटे–कटे रहते है और अन्दर ही अन्दर एक अनाम लड़ाई लड़ते रहते है । कहानी में सम्बन्धें की व्यर्थता के अन्दर टूट रही मीरा की जिन्दगी दिखाई पड़ती है। रवि भी कहीं भी किसी भी स्तर पर सम्बन्ध बनाने का बोध नहीं करता है । व्यस्त जिन्दगी ने सम्बन्धें का लोपकर, व्यक्ति को मात्रा पुर्जा बना दिया है । कहानी में संबंधें के विघटन तथा इससे जुड़े रहने की विवशता है ।

'गुंझल' कहानी में पारिवारिक सम्बन्धें के विघटन और इससे जुड़े रहने की छटपटाहट व्यक्त हुई है । लेखक कहानी के अन्दर सम्बन्धें को नहीं उद्घाटित करता, फिर भी कारण स्पष्ट है । चन्दन और कुन्तल पति–पत्नी होकर भी आपसी तनाव के कारण एक दूसरे से दूर है । कुन्तल और चन्दन अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एक दूसरे से दूर रहते है । अलग रहने की पीड़ा बड़ी दुखदायी होती है, दोनों में सम्बन्धें को बनाए रखने के लिए कोई विशेष उत्सुकता नहीं दिखाई देती है । सम्बन्धें में इतना फासला बढ़ता जाता है कि दोनों एक ही बस में एक सीट पर बैठकर यात्राा करते समय ह्रदय की दूरियों से काफी दूर है यहां तक कि अब उन्हें एक दूसरे के स्पर्श से भी घृणा हो गई है । – 'ब्रेक लगी, तो एक बार पति–पत्नी के शरीर आपस में छू गए कुन्तल ने अपनी बाहें सिकोड़ ली और पहले से थोड़ा सिमटकर

बैठ गई ।'[4] सम्बन्धें की चटखन की इससे बड़ी त्रासदी क्या हो सकती है, सहज रूप से अंदाजा लगाया जा सकता है । अपनी मानसिक सोच में चन्दन विचारों के द्वन्द्व में उलझ सा गया है और विचारों के इसी गुंझल से निकलने की वह भरपूर कोशिश करता है । लेखक दोनों की तनावपूर्ण एवम् अवसाद ग्रस्त जिन्दगी के सम्बन्ध में कुछ भी अभिव्यक्त करने में संकोच करता है, फिर भी कहानी में दोनों के सम्बन्ध अन्तःसंघर्ष से मुखर है । 'गुंझल' के अंदर 'निर्णय' का प्रश्न अनवरत पति–पत्नी के अन्दर चलता है जिसका उत्तर चाहकर भी पात्रा नहीं दे सकते ।

'पहचान' कहानी में व्यक्ति समूह एवम् भीड़ में अपना परिचय खोता जा रहा है । यहां तक कि व्यक्ति परिवार के बीच 'पहचान' की तलाश में खोया हुआ है । 'पहचान' कहानी में शिवजीत अपनी 'पहचान' की तलाश में खाली, अजनबी और परिचित लोगों के बीच भी मेहमान सा अनुभव करता है । सम्बन्धें के एक–एक रेशे टूटे हुए हैं, पर सम्बन्धें की तलाश और नई जिन्दगी की शुरूआत में बच्चा अकेला और फालतू हो जाता है । माता–पिता का जीवन शिवजीत के अहं को आहत करता है । ग्यारह वर्ष का शिवजीत अपने माता–पिता की मनोवैज्ञानिक समस्याओं के बीच कितना अलग एवम् कुंठित हो गया है कि वह अभी से अपने माता–पिता के मूल परिवार से विघटित हो गया है, और उसे परिवेश में तालमेल बैठाने की कोशिश करनी पड़ रही है । साथ ही भविष्य के विषय में सोचकर भी परेशानी महसूस करता रहता है । इस कहानी में लेखक ने बालक शिवजीत के माध्यम से पति–पत्नी के आपसी तनाव और अलगाव के बाद पत्नी द्वारा किए गए दूसरे विवाह के परिणाम स्वरूप शिवजीत के नाम से आये परिवर्तन के बहाने सन्तान की अपनी वास्तविक पहचान का प्रश्न उठाया है ।य[5]

'सुहागिने' कहानी सम्बन्धें के विघटन और जुड़े रहने की छटपटाहट की समस्या को लेकर लिखी गई है । कहानी के अन्दर सभी सम्बन्ध छिन्न–भिन्न हो गये है पर कहीं न कहीं से अवचेतन रूप से सम्बन्धें का बोध बना रहता है । कहानी में सम्बन्धें की तलाश जारी है । मनोरमा सुशील ;पतिद्ध से कुछ कहना चाहती है और वह अपने खालीपन का बोध उसे कराना चाहती है, लेकिन वह चाहकर भी कुछ नहीं कर पाती । अतः कहानी में अनिर्णय की स्थिति में आधुनिक बोध होता है । 'सुहागिनें' की दोनों नायिकाएं मनोरमा और काशी आत्मनिर्भर है ।

मनोरमा सचदेवा गर्ल्ज हाई स्कूल की हैड मिस्ट्रेस होते हुए भी भीतर से बहुत अकेली है वह अपने सुशील से अलग रहकर नौकरी करती है पति बाहर नौकरी पर है और शायद उसे पत्नी की इतनी जरूरत नहीं जितनी उसके पैसे की । यही हालत उसकी नौकरानी काशी की है । मनोरमा का पति – 'सुशील नहीं चाहता था कि वह नौकरी छोड़कर घर–गृहस्थी के लायक ही रहे । साल छः महीने में सुशील को अपनी बहन उम्मी का विवाह करना था । उसके दो भाई कालेज में पढ़ रहे थे । उन दिनों उनके लिए एक–एक पैसे की कीमत थी । कम से कम चार–पाँच साल एहतियात से चलना चाहता था ।य6 विवाहिता नारी यदि नौकरी करती है तो ससुराल वाले और पति समझते है कि उसे नौकरी की इजाजत देकर बहुत बड़ा एहसान किया है । अतः उसकी आय पर पहला अध्किार उनका है । मनोरमा को सुशील से कितना कुछ कहना है और कितना कुछ स्वयं से शिकायत है परन्तु मन ही मन के अन्तर्द्वन्द्व तथा स्वाभिमान को दबोच वह जी रही है ।

मनोरमा और काशी दोनों को विवाह का कोई सुख नहीं । वे तो केवल सुहागिन होने की विडम्बना ढो रही है – फ्हमारी असमान व्यवस्था अपने सोच एवम् व्यवहार से किस हद तक कर, अमानवीय और स्त्राी विरोधी हो सकती है । जैसी स्थितियां है और उनमें आर्थिक दृष्टि से स्त्राी के आत्म निर्भर होने से भी कोई बड़ा फर्क पड़ने वाला नहीं है पुरूष वर्चस्व वाले इस सामाजिक ढांचे में बुनियादी परिवर्तन के बिना स्त्राी सब कहीं एक सी बेबस और लाचार है ।य7

मनोरा और काशी देखने में तो समाज के लिए सुहागिने है परन्तु उनका मन अकेलेपन, खालीपन और घुटन की संवेदना से सम्बन्धें को अजनबीपन की ओर ले जाता है ।

'क्वार्टर' कहानी निम्न मध्यवर्गीय परिवार के आपसी कलह तथा दाम्पात्य सम्बन्धें में आई कटुता को रेखांकित करती है जो महानगरीय जीवन बोध् की वर्तमान में एक त्रासदी भी है । शंकर राजवंशी और उसकी पत्नी राध दिल्ली में कनाट पैलेस से कुछ आध मील की दूरी पर पांच कमरे का फ्रलैट लेकर रहते है । वेतन एवम् क्वार्टर से वे दोनों सन्तुष्ट से दिखते है परन्तु इसमें शंकर के पिता, दो बहने, दो भतीजे, बड़े भइया नाथ तथा अन्त में मुकुन्द के आने से क्वार्टर काफी व्यस्त सा हो गया है इसलिए तो पत्नी राध कहती है कि जितने लोग आकर

पड़े रहते है उससे मुसाफिर खाने से कुछ कम भी लगना नहीं लगता मुझे ।य8 शंकर को पहले इसी फ्रलैट को लेकर कितना गर्व था, परन्तु सम्बन्धियों की इस भीड़ में वह उसे काटने को दौड़ता है क्योंकि पत्नी राध के साथ–साथ उसे बच्ची की देखभाल जो करनी है ।

पारिवारिक सम्बन्धियों का इस तरह एक साथ रहना अर्थ के स्तर के साथ–साथ सभी सदस्यों के विचारों में सन्तुलन भी नहीं स्थापित कर पाता है क्योंकि शंकर के बूढ़े पिता को ऐसा प्रतीत होता है कि उनका बेटा शंकर उनकी देखभाल उचित ढंग से नहीं करता है और पैसों को अनावाश्यक पानी की तरह बहा रहा है । वहीं शंकर को अपने पिता का अनावश्यक हस्तक्षेप पसन्द नहीं है । शंकर के दोस्तों के ऊपर होने वाला खर्च देखकर पिता जी कुढ़ते रहते है –फ्कहीं इस तरह भी घर चला करते है? कमाना बाद में और खर्च पहले कर देना । मैं कहता हूं सारे अरमान एक बार में पूरे कर लोगे तो बाकी उम्र काटने को बचेगा क्या?य9 पिताजी पुरानी पीढ़ी की सोच रखते हुए भी वर्तमान की स्थिति को शंकर से इसलिए जिक्र करते रहते है, क्योंकि यह अनावश्यक खर्च एक दिन उन्हें परेशानी में डाल सकता है । परन्तु क्वार्टर के पापा का अस्तित्व अपने बेटे शंकर राजवंशी की दृष्टि में नगण्य है । पिता को पुत्रा की आदतें पसंद नहीं और पुत्रा को पिता की इसलिए दोनों पीढ़िया तनाव झेलती है ..... । पापा विरोध चाहे कितना भी करे पुत्रा के साथ रहना उनकी मजबूरी है वह अपने को फालतू अनुभव करते हुए पहाड़ जैसे दिन बिता रहे है।य10 केवल पिता–पुत्रा की बात नहीं भाई–बहन, भाई–भाई, यहां तक कि पति–पत्नी के संबंध तक क्वार्टर में इस तरह विघटित हो चुके हैं कि वे एक दूसरे पर केवल अपना दृष्टिकोण लादना चाहते हैं तथा एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझने की चेष्टा नहीं करते । वास्तव में आधुनिकीकरण के सन्दर्भ में आज परिवार का ढांचा टूट रहा है । कहानी में सम्बन्धें की व्यर्थता और अकेलेपन की यंत्राणा स्पष्ट तौर पर दिखती है ।

निष्कर्ष में हम कह सकते हैं कि आधुनिकीकरण तथा स्वतन्त्राता से भारतीय परिवेश और जनमानस में समाज से कटने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है और इस कटने–टूटने और बिखरने में वह नितान्त अकेला घूटता गया है । स्थिति यह है कि स्त्राी–पुरूष, पति–पत्नी, माता–पिता, भाई–बहन, प्रेमी–प्रेमिका आदि के संबंध महत्वहीन हो गए है । अब चारों तरफ

अहं के गुब्बारे में भरी हुई नफरत की हवा डोलती है । परिणाम यह है कि मानवीय संबंध मात्रा औपचारिकता, विवशता, अभिशप्तजीवन और ऊब व अकेलेपन के पर्याय बन कर रह गए है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ – आधर ग्रन्थ

[1] नये बादल ;भूमिकाद्ध मोहन राकेश पृ. 3 संस्करण 1974
[2] एक और जिंदगी भूमिका पृ. 13
आलोचना और साहित्य – डॉ. इन्द्रनाथ मदान, पृ. 153
[3] गुझंल, मोहन राकेश, पृ. 380
[4] कथाकृति – मोहन राकेश – ओम प्रभाकर, पृ. 242
[5] सुहागिने – मोहन राकेश पृ. 242
[6] क्वार्टर – मोहन राकेश पृ. 138
[7] वहीं 126
[8] आधुनिकता और हिन्दी कहानी – जगन सिंह, पृ. 45
[9] हिन्दी कहानी का विकास – मधुरेश , पृ. 82
[10] क्वार्टर – मोहन राकेश पृ. 138

आधर ग्रन्थ

1. एक और जिन्दगी – राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली 1961
2. फौलाद का आकाश – अक्षर प्रकाशन दिल्ली, 1966
3. सुहागिने – हिन्दी पाकेट बुक्स, 1966
4. क्वार्टर – राजपाल एण्ड सन्स, 1971
5. पहचान – राजपाल एण्ड सन्स, 1972